यक रहैं राजा

(अवधी निबन्ध)

डॉ. रामबहादुर मिश्र

यक रहें राजा

(अवधी निबन्ध)

डॉ. रामबहादुर मिश्र

डॉ. रामबहादुर मिश्र

जन्म : 12 सितम्बर 1955 जमुवारी शुकुल बाजार, सुलतानपुर, उ.प्र.

शिक्षा : पी-एच.डी. (हिन्दी विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय) (1987)

विषय : अवधी का फाग साहित्य एक अध्ययन

व्यवसाय : अध्ययन/अध्यापन

प्रकाशित कृतियाँ :

1. अवधी लोकोक्तियाँ
2. अवधी लोकधारा
3. कुछ अनुभूतियाँ कुछ विचार
4. अवध मा होली खेलैं रघुबीरा (एक हजार अवधी फागों का विवेचन)
5. लागे मसवा असाढ़ (अवधी बारहमासा गीतों का विवेचन)
6. यक रहें राजा (अवधी निबन्ध)

सम्पादन :

1. नखत – 1 (अवधी के प्रतिनिधि ग्यारह कवि) 1992
2. नखत – 2 (अवधी के नौ प्रतिनिधि कवि) 2002
3. जोधंइया (अवधी त्रैमासिकी) 1990 से 1994 तक
4. अवध ज्योति (अवधी त्रैमासिकी) 1994 से अद्यतन
5. ये माटी अवधरानी है (अवधी शोधग्रंथ) 2005

उपलब्धियाँ :

जायसी पंचशती सम्मान अवधी अकादमी सुलतानपुर 1995

फेलोशिप संस्कृति निदेशालय उ.प्र. शासन 1998

अवधी रत्न विश्व अवधी संस्थान सुलतानपुर 2003

शोध :

1. "डॉ. रामबहादुर मिश्र की अवधी लोक साहित्य साधना" विषय पर लखनऊ विश्वविद्यालय से एम.फिल.- 2003
2. "डॉ. रामबहादुर मिश्र की अवधी साधना" विषय पर कानपुर विश्वविद्यालय से लघु शोध 2005

विषय सूची विषय

यक रहें राजा	13
अभागा मोरे देसवा मा अबहूं किसान	21
लोक विरूद्धम् न करणीयम्	26
अइसन जोग भरथरी कीन	35
मोटी मोटी रोटिया पोयौ बरेठिन	43
सावन हरैं भादौं चीत	51
बिरहा छंड़ि न गावै आन?	57
लागे मसवा असाढ़	67
राजा के जनमे है राम	77
अवध मा होरी राम मचाई	85
चढ़त असढ़वा घुमड़ि घन गरजै	92
रामहि राम रटन लागी जिभिया	98
राम लला कर नहछू	105
एकहि बंसवा के दुइ रे कइनिया	111
देस आपन तरक्की बहुत करि गवा?	118

यक रहें राजा

लोक साहित्य मा लोकगीत अउ लोक कथाई दूनौ विधा सबसे ज्यादा सुनी औ कही जात है। लोकगीत मौसम, रितु अउ समय संस्कार के अनुसार गाये जात हैं, मुला लोक कथा कइ सनी मौसम या महीना नहीं। यह बारहौ मास कहा सुनावा जात है। हाँ यक बात जरूर है कि लोक कथा दिन मा नहीं सुनाई जात। यक लोक बिसुवास है कि जे दिन में किहानी सुनावत है वहिके मामा हेराय जात हैं। वइसे यह बात हंसी मजाक औ हंसौआ मा कही गय है, मुला यक बात है कि गाँव गेराँव मा खेती, किसानी, मजूरी औ आपन काम धन्धा करै वाले का अतनी फुरसत कहां कि वह दिन मा काम की बेरिया बैठि के किहानी सुनावै मा आपन समय बरबाद करै। न सुनवैया का मौका, न कहवइया का फुरसत। हाँ जब दिन भरे कै काम धाम निपटाय के संझा बेरिया खाय पी के बैठक परत है तब ई किहानी सुनायी जात है। जाड़े के मौसम मा लोक कथा जयादा सुनैक मिलति हैं, काहे कि टोला-मुहल्ला खाय पीके जब तपता (अलाव) पर बैठत है तौ गांव देस के हाल-चाल औ सुख की बातें भये के साथ कथा-किहानी शुरू होइ जात है, कबौ-कबौ अधरतिया होइ जात है, किहानी सुनत-सुनत। तपता के अलावा घर मा बूढ़ी आजी-दादी या बाबा-आजा जिहका पुरनिया कहा जात है उइ लरिकन का किहानी सुनावत हैं। इनमा बड़ी छू बातै छिपी रहति हैं इनमा लोकजीवन कइ रस भरा रहत है। मनई कइ आचार, विचार, रीति-खोज, धरम-करम, रहन-सहन, आस-बिसुवास, सुख-दुख कइ झाँकी देखइ का मिलत है।

ई कहानिन मा कइयव संदेस छिपे रहत है जिहका सुनि के बाल मन पर बड़ा असर होत है। करुणा, दया, जीव-जंतु से नेह, पेड़-पौधा, पसु-पक्षी सबमा ईसर कै बास, ऊँच-नीच, गरीब-अमीर, राजा-रंक न जाने कतने भाव छुपे रहत है इन मा। कथा मा परिवार अउ समाज के सम्बंधन पर बड़ा आदर्स भरा रहत है। अस कउनौ बात या बिसय नहीं जउने के बारे में ई लोक कथा मा कुछ न कहा गवा होय। हर कथा मा यक उपदेस छिपा रहत है यही बहाने समाज वहिका अपनावत है। जइसन यक भइया दुइज कइ कथा है जिहमा नदी-पहाड़, पेड़, साँप, बीछी, बाघ, भेड़हा, भेड़हरि, झाड़ी, झंखार सब कै पूजा कीनिगै। यहि के पाछे यहै मरम है कि पर्यावरन खातिर आदर कै भाव राखै से यहिकै सुरक्षा होये।